भगत कबीर – सबद ६

माधउ जल की पिआस न जाइ ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२३

माधउ जल की पिआस न जाइ ॥
जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥१॥ रहाउ ॥
तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥
जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥१॥
तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥
जमु मंजारु कहा करै मोर ॥२॥
तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥
मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥३॥
तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥
कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥४॥२॥

सार: साधक वह लोग हैं जो ज्ञान और सत्य की खोज में लगे रहते हैं। उनकी यात्रा अक्सर दुनिया के बारे में एक साधारण जिज्ञासा से शुरू होती है लेकिन धीरे-धीरे उन्हें अस्तित्व की गहरी सराहना और समझ की ओर ले जाती है। इस खोज का मुख्य उद्देश्य परम सच को समझना है जो जीवन का सार है। इस यात्रा के दौरान साधक संसारिक दुखों का समाधान खोजते हैं और यह साबित करते हैं कि सच्चा ज्ञान आत्म-खोज के बिना संभव नहीं है।

माधउ जल की पिआस न जाइ ॥
प्रिय सर्वव्यापी ऊर्जा, पानी की प्यास बुझती नहीं। यह जीवन के सार को समझने के लिए गहरी लालसा का प्रतीक है।

जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥१॥ रहाउ ॥
पानी के बीच एक तीव्र आग उत्पन्न हो गई है जो इस बात का संकेत है कि ज्ञान जीवन की गहरी सच्चाई को खोजने की चिंगारी जगाता है। (१)(विराम)

तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा, आप महासागर हैं और मैं आपके जल में एक मछली मात्र हूं। यह ब्रह्मांड के विस्तार और सृष्टि का प्रतीक है जो परस्पर जुड़े हुए हैं।

जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥१॥
मैं पानी में रहता हूं बिना पानी मेरा अस्तित्व असंभव है। इसी तरह हमारा अस्तित्व सार्वभौमिक चेतना पर निर्भर है। (१)

तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥
सर्वव्यापी शक्ति, आप मेरा आश्रय हैं और मैं आपका कोमल तोता हूं। यह प्रकृति की इच्छा के आगे समर्पण को आलोचनीयता के खिलाफ ढाल के रूप में प्रतिनिधित्व करता है।

जमु मंजारु कहा करै मोर ॥२॥
एक बिल्ली मेरे लिए ख़तरा कैसे हो सकती है? यह उदाहरण दर्शाता है कि जागरूकता अर्थात ज्ञान की शक्ति हमें जीवन में भटकने से सुरक्षित रखती है। (२)

तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥
सर्वव्यापी जागरूकता, आप वृक्ष है और मैं आपकी शाखाओं में शरण लेने वाला पक्षी हूं। अर्थात साधक सर्वव्यापी जागरूकता में आश्रय लेता है।

मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥३॥

आपके दिव्य ज्ञान की पहचान न कर पाना वास्तव में दुर्भाग्य है। यह विलाप अंतर्निहित ज्ञान को पहचानने की असमर्थता को दर्शाता है। (३)

तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥

सर्वव्यापी चेतना, आप मेरे मार्गदर्शक हैं जो मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा रहे हैं और मैं नए शिष्य के रूप में अपनी भूमिका स्वीकार करता हूं।

कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥४॥२॥

कबीर कहते हैं, सब एक हो जाओ, समय निकट है। यह आह्वान एकता की पुकार है जो हमारे सांझे अस्तित्व को ऊंचा उठाने के लिए प्रेरित करती है। (४)(२)

तत्त्व: भगत कबीर मानते हैं कि जीवन जन्म से मृत्यु तक एक अद्भुत यात्रा है जो सीखने के अवसरों से भरी हुई है। यदि हम इन सीखों का उपयोग करें तो वह हमें हमारे आंतरिक ज्ञान तक पहुंचने में मार्गदर्शन कर सकती हैं कि हम सब आपस में जुड़े हुए हैं। इस जुड़ाव को पहचानना ही जीवन का मूल सार है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com